इस्लामिक दावाअ सेंटर

[सलात वितर अहकाम ओ मसाइल]

अल्लाह वितर है और वितर को पसन्द करता है।

بسم الله الرحمن الرحيم

सलात वितर अहकाम ओ मसाइल

बर्रे सग़ीर से कस्बे मआश के लिए सऊदी अरब तशरीफ लाने वाले लोग जब यहाँ के बाशिन्दों को सुन्नत नबवी सल्लाहो अलैहे वसल्लम के सही तरीक़े के मुताबिक़ सलात वितर पढ़ते हुए देखते हैं तो हैरान हो जाते हैं और इसे ताज्जुब की नज़रों से देखते हैं फिर हर मजलिस मे बार बार यही सवाल उठता है के हमारे मुल्कों मे सलात वितर अदा करने का जो तरीक़ा है वो सही है या यहाँ के लोगों का ? इसी तरह एहबाब का बेहद इसरार था के लोगों के अंदर इस मसले के मुताल्लिक़ बड़ी बेचैनी और इस्तराब पाया जाता है इस लिए इस मौज़ू पर एक मज़मून की बहुत ज़रूरत है लोगों की इसी ज़रूरत और इसरार की बिना पर सुन्नत सहीहा की रौशनी मे सलात वितर अहकाम ओ मसाईल पर यो मुख़्तसर सा मज़मून तरतीब दिया गया है अल्लाह रब्बिल आलमीन से दुआ है के इसे लोगों के लिए मुफीद और कारआमद बनाए और तमाम मुसलमानों के सुन्नत नबवी सल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुताबिक़ अमल की तौफीक़ दे आमीन!।

सलात वितर की फज़ीलत

वितर सुन्नत मोवक्क़दा है इस की बड़ी फज़ीलत है ख़ारजा बिन हुज़ाफा अल अदवी रज़ि अल्लाह अंहा से रिवायत है के रसूल अल्लाह सल्लाहो अलैहे व सल्लम हमारे पास आए और फरमाया "अल्लाह तआला ने तुम्हे एक नमाज़ बतौर ईनाम के नवाज़ा है और वह वितर है जिसका वक्त सलाते इशां और तुलू ए फजर के दर्मयान है {अबू दाऊद तिर्मीज़ी} अली रज़ि फरमाते हैं कि अल्लाह के रसुल ने सलात वितर पढ़ी फिर फरमाया "ऐ कुरान वालो (मुसलमानों) वितर पढ़ा करो अल्लाह तआला वितर है और वितर से उसे मोहब्बत है" [सुन्न अरबा सही सुन्न इब्नेमाजा] वितर की एहमीयत का अंदाज़ा इससे लगाया

जा सकता है के नबी करीम सल्लाहो अलैहे वसल्लम वितर और फजर की सुन्नत को कभी भी (सफर मे हों या हजर मे) नही छोड़ते थे [बुख़ारी हि/1159, मुस्लिम हि/724] एक मरतबा नबी करीम सल्लाहो अलैहे वसल्लम अपने सहाबा के हमराह सफर मे थे जिस मे इत्तेफाक़न सब सो गए जब सूरज तुलुअ हुआ तो उस की गर्मी ने सब को बेदार किया आप ने वहां से कूच करने का हुक्म दिया फिर दूसरी जगह पड़ाव डालने के बाद बिलाल रज़ि ने अज़ान दी तो आप सल्लाहो अलैहे वसल्लम मामूल के मुताबिक़ पहले दो रकत सून्नत अदा की फिर फजर की नमाज़ पढ़ाई {सहीह मुस्लिमय/681}।

और जहाँ तक वितर को सफर मे पढ़ने की दलील है तो इब्ने उमर रज़ि फरमाते हैं के नबी करीम सल्लाहो अलैहे वसल्लम सफर मे फर्ज़ सलातों के सिवा अपनी सवारी पर इशारे से सलात पढ़ते थे और सवारी ही पर वितर भी पढ़ते थे {बुख़ारी य 999, मुस्लिम/700}

इस हदीस मे इस बात की भी दलील मौजूद है के सलाते वितर सुन्नत है क्यों के आप सल्लाहो अलैहे वसल्लम इसे सवारी पर पढ़ते थे अगर ये वाजिब या फर्ज़ होती तो सवारी पर नही पढ़ते, और सबसे बढ़ी दलील के वितर सुन्नते मौक़दा है नबी करीम सल्लाहो अलैहे वसल्लम का ये फरमान है के वितर हर मुसलमान पर हक़ है जो पाँच रकत पढ़ना चाहे वह पाँच , जो तीन पढ़ना चाहे वो तीन, जो एक रकत पढ़ना चाहे वो एक रकत पढ़े [अबू दाऊद]

इस हदीस मे आप सल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कोई हतमी तादाद नही बताई है बल्की पढ़ने वाले को इख़्तेआर दिया है जिससे साबित होता है कि वितर अगर वाजिब होती तो आप सल्लाहो अलैहे वसल्लम इसकी हतमी और वाजिब तादाद मुतय्यन फरमाते, पढ़ने वाले की मरज़ी पर हरगिज़ न छोड़ते

वितर का वक़्त

सलात इशां के बाद से लेकर तुलुअ फजर तक रहता है जैसा के ख़ारजा बिन हुज़ाफा साबिक़ हदीस से इसका सबूत मिलता है, नबी करीम सल्लाहो अलैहे वसल्लम ने रात के तीनो हिस्सों मे वितर पढ़ी है लेकिन रात के आख़िरी हिस्से मे वितर पढ़ना अफज़ल ओ मुस्तहब है आएशा रज़ि फरमातीं हैं : के नबी करीम सल्लाहो अलैहे वसल्लम ने रात के शुरू, दरमियानी और आख़री हिस्से मे वितर पढ़ी है , फिर वक्त सहर वितर पढ़ना आप सल्लाहो अलैहे वसल्लम का मामूल बन गया [बुख़ारी / 996, मुस्लिम / 745] जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाह अंहा रिवायत करते हैं के आप सल्लाहो अलैहे वसल्लं ने फरमाया "जिसे इस बात का ख़ौफ हो के वो आख़री शब मे नही उठ सकेगा तो वो शुरू शब ही मे पढ़ले, और जिसे उम्मीद हो के वो आख़री शब मे उठ जाएगा तो वो आख़री शब ही मे वितर पढ़े क्यों की रात की सलात मे फरिश्ते हाज़िर होतें हैं और यही अफज़ल है [मुस्लिम / 755]

आख़री शब मे वितर पढ़ने की फज़ीलत मे सहीहैन मे अबु हुरैरा रज़ी की यह रिवायत भी दलालत करती है के अल्लाह रब्बुल आलमीन आख़री तिहाई रात मे रोज़ाना आसमान दुनिया मे नज़ूल फरमाता है और यह एलान करता है के "कौन है जो मुझे पुकारे फिर मै उसकी दुआ कुबूल करूँ कौन है जो मुझ से सवाल करे तो मै उसे दूँ , कौन है जो मुझ से मग़फेरत तलब करे फिर मै उस की मग़फेरत कर दूँ" [बुख़ारी / 1145, मुस्लिम / 758]

जिसे इस बात का अंदेशा हो के वह रात के आख़री पहर मे बेदार नही हो सकेगा उस के लिए सोने से पहले ही वितर पढ़ लेना मुस्तहब है। अबुहुरैरा रज़ि फरमाते हैं के मुझे मेरे ख़लील (नबी सल्लाहो अलैहे वसल्लम) ने तीन बातों की वसीयत की जिसे मै मरते दम तक नही छोड़ूंगा हर माह मे तीन दिन सौम (यानी 13,14,15) चाश्त की सलात और सोने से पहले वितर [बुख़ारी / 1981, मुस्लिम / 721]

आप सल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यही वसीयत अबुदरदा रज़ि को भी की थी [मुस्लिम / 722]

वितर की रकत और उन का तरीक़ा

वितर की कम से कम अदद एक रकत है उमर रज़ि नबी करीम सल्लाहो अलैहे वसल्लम से रिवायत करते हैं वितर आख़िर रात मे एक रकत है [मुस्लिम / 752]

अबु मजलिस फरमाते हैं के मै ने इब्ने अब्बास रज़ि से वितर की तादाद के बारे मे पूछा तो उन्होने फरमाया के मै ने अल्लाह के रसूल सल्लाहो अलैहे वसल्लम से सुना है के वितर आख़री रात मे एक रकत है , अबु मजलिस फरमाते हैं के मै ने इब्ने उमर रज़ि से भी यही सवाल किया तो उन्होने भी यही जवाब दिया [मुस्लिम / 753]

और हक़ीक़त मे अगर ग़ौर किया जाए तो वितर एक ही रकत है क्यों के वह ही सारी रकतों को ताक़ बनाती है, नबी करीम सल्लाहो अलैहे वसल्लम फरमाते हैं अल्लाह वितर है और वितर को पसन्द करता है। [सहीह सनन इब्ने माजा] नीज़ आप सल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया रात की सलात दोदो रकत है जब सुबह होने का अन्देशा हो तो एक रकत पढ़ लो यह (एक रकत) पढ़ी हुई सलात को ताक़ बना देगी [बुख़ारी / 749]

नबी करीम सल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मुख़्तलिफ तादाद मे वितर पढ़ी है और ज़्यादा से ज्यादा आप सल्लाहो अलैहे वसल्लम से तेरह रकत साबित है इन रकत मे आप सल्लाहो अलैहे वसल्लम का क्या मामूल था वह नीचे सुन्नत की रौशनी मे बयान किया जा रहा है।

1. तेरह रकत का तरीक़ा :-

- हर दो रकत पर सलाम फेरते फिर आख़िर मे एक रकत वितर पढ़ते [बुख़ारी/992,मुस्लिम/182(763)]
- तेरह रकत मे पाँच रकत वितर एक तशहुद और एक सलाम से अदा करते

[सहीह मुस्लिम/737]

2. ग्यारह रकत का तरीक़ा :

   दो दो रकत कर के पढ़ते थे फिर आख़री मे एक रकत वितर पढ़ते [मुस्लिम / 736]

3. नौ रकत का तरीक़ा :

   आठवी रकत मे तशहुद करते और सलाम किये बग़ैर ख़ड़े हो जाते फिर नवी रकत मे तशहुद कर के सलाम करते याने के दो तशहुद और एक सलाम से पढ़ते [मुस्लिम / 746]

4. सात रकत का तरीक़ा

   - छटी रकत मे तशहुद करते फिर खड़े हो जाते फिर सातवीं रकत मे तशहुद के बाद सलाम करते याने दो तशहुद और एक सलाम से पढ़ते [सहीह इबने हिब्बान]
   - एक तशहुद और एक सलाम से याने सातों रकत लगातार पढ़ते फिर आख़िर रकत मे तसहुद मे बैठ जाते फिर सलाम करते [सहीह सुनन नसई]

5. पाँच रकत का तरीक़ा

   एक रशहुद और एक सलाम से पढ़ते [मुस्लिम / 737]

6. तीन रकत का तरीक़ा

   - दो रकत पढ़ कर सलाम फेरते फिर आख़िर मे एक रकत वितर पढ़ते [सहीह इब्ने हिब्बान सनद क़वी]। इब्ने उमर रज़ि. फरमाते हैं के अल्लह के रसूल सल्लाहो अलैहे वसल्लम वितर की दो और एक रकत मे सलाम से फस्ल करते [इब्ने हब्बान, क़वा अल हाफिज़ इब्ने हजर] और नाफेए बिन बिन उमर रज़ि. से बयान करते है के वह दो रकत पढ़ कर सलाम फेर देते फिर अपनी बाज़ हाजतों का हुक्म देते [बुख़ारी /991], साबिक़ मुफ्ती सउदी अरबिया अल्लामा इब्ने बाज़ रह. फरमाते हैं तीन रकत दो सलाम से पढ़ना ही अफज़ल है

- तीनो रकतें एक तशहुद और एक सलाम से याने दो रकत पढ़ने के बाद तशहुद ने बैठे बग़ैर तीसरी रकत के लिए खड़े हो जाते फिर तशहुद करते और सलाम फेरते आएशा रज़ि. फरमाती हैं के अल्लाह के रसूल सल्लाहो अलैहे वसल्लम तीन रकत वितर पढ़ते जिसके आख़िर मे तशहुद मे बैठते अमीर उल मोमेनीन के वितर पढ़ने का भी यही तरीक़ा था[मुस्तदरक हाकिम तोहफतुल हौज़ी 2/567] अबु हुरैरा रज़ि.नबी करीम सल्लाहो अलैहे वसल्लम से रिवायत करतें है के : तीन वितर न पढ़ो पाँच या सात वितर पढ़ो (और अगर तीन रकत वितर पढ़ना हो तो) सलात मग़रिब की तरह न पढ़ो [सुनन दारुल कुतनी इब्ने हिब्बान, सुनन बैहक़ी]दोनो हदीस से साबित होता है के तीन रकत वितर अगर पढ़नी हो तो दो तशहुद और दो सलाम से या एक तशहुद और एक सलाम से पढ़ी जाए इन्ही दोनों तरीक़ों के अपनाने से मग़रिब की मुशाबेहत नही होती है, जो लोग ये समझते हैं के वितर मे अल्लाहो अकबर और दुआ ए कुनूत के ज़रिये मग़रिब की मुख़ालेफत हो जाती है उन का यह वहम और गुमान दुरुस्त नही है क्यों के वितर मे दुआ वाजिब नही है अगर कोई न करना चाहे तो कोई हरज नही है, नीज़ मग़रिब की और दीगर सलातों मे दुआए कुनूत नाज़ेला भी जायज़ ओ मसनून है, इसी तरह दुआए कुनूत के लिए अल्लाहो अकबर कहना भी किसी मरफ़ूअ हदीस मे नही है वल्लाहो आलम , रही इब्ने मसउद रज़ि की ये रिवायत रात की वितर दिन की वितर की तरह है तो ज़इफ है इमाम दार कुतनी और अहनाफ के मशहूर आलिम इमाम ज़ैली रहेमोअल्लाह व दीगर आइम्मा कराम ने इसे ज़ईफ क़रार दिया है मुलाहेज़ा हो [निस्फ उर राया 116/2]

7. एक रकत का तरीक़ा :-

ये वितर की कम से कम तादाद है जैसा के दलाइल की रौशनी मे बयान किया जा चुका । सिर्फ एक ही रकत पढ़ कर तशहुद के बाद सलाम फेर लें जैसा के सहीह मुस्लिम और मुसनद

अहमद मे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाह अंहा और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाह अंहुमा की मुश्तरका रिवायत मे इर्शादे नबवी सल्लाहो अलैहे वसल्लम है

नमाज़े वितर रात के आख़िर हिस्से मे एक रकत है

वितर की क़िरात

अबी बिन काब रज़ि फरमाते हैं के नबी करीम सल्लाहो अलैहे वसल्लम वितर का पहला रकत मे सुरह आला और दूसरी रकत मे सुरह अलकाफेरून और तीसरी रकत मे सुरह इख़लास पढ़ते फिर आख़िर मे सलाम फेरते और सलाम के बाद तीन बार सुब्हानल मलेकुल कुद्दूस (سُبْحَانَ الْمَلَكُ الْقُدُّوسُ) कहते [सहीह सुनन निसाई] इस हदीस मे गरचे ये मज़कूर नही है के आप एक तशहुद से पढ़ते थे या दो तशहुद से लेकिन ये इसी पे महमूप है के आप तीनों रकत एक तशहुद से पढ़ते थे क्यों के आप सल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मग़रिब की तरह वितर को पढ़ने से मना किया है।[सहीह इब्ने हिब्बान, दारुल कुतनी, बैहक़ी]

दुआ ए कुनूत

दुआ ए कुनूत सुन्नत है वाजिब नही इस की दो क़िसमे हैं

1. **कुनूत वितर**: जो रूकु से क़ब्ल अफज़ल है , अबी बिन काब रज़ि फरमाते हैं के अल्लाह के रसूल सल्लाहो अलेहे व सल्लम फरमाते हैं के वितर मे रुकूअ से पहले कुनूत करते थे [सहीह सुनन इब्ने माजा] और जब अनस बिन मालिक रज़ि से सवाल किया गया के कुनूत रुकूअ से क़ब्ल है या रुकूअ के बाद तो आपने फरमाया : रुकूअ से पहले फिर आप ने फरमाया : अल्लाह के रसूल सल्लाहो अलैहे वसल्लम ने रुकूअ के बाद एक महीना बनी सुलैम के क़बीलों पर बद दुआ की [बुख़ारी / 1002 , मुस्लिम / 677]

2. **कुनूते नाज़ला:** मुसलमानो पर मुसीबत के वक़्त उन की इज़्ज़त और सरबुलंदी और उस मुसीबत से निजात के लिए दुआ, कुनूत नाज़ेला कहलाती है जो रुकूअ के बाद अफज़ल है , इब्ने अब्बास रज़ि से रिवायत है के अल्लाह के रसूल सल्लाहो अलैहे वसल्लम पूरे एक माह , ज़ोहर , असर , मग़रिब इशां और सलाते फजर मे समेअल्लाह हुलेमन हमेदा कहने के बाद आख़िर रकत मे बनु सुलैम के क़बाइल रअल और ज़क़वान और असया पर बददुआ करते रहे और आप के पीछे लोग आमीन कहते थे [सहीह सुनन अबी दाऊद] इस तफसील से कुनूत के मुताल्लिक़ तमाम रिवायतों पर अमल हो जाता है
हमेशा सलाते फजर मे दुआ ए कुनूत पढ़ना दुरुस्त नही है नबी करीम सल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक माह तक चन्द क़बीलों पर बद दुआ की थी इस के बाद आपने तरक कर दिया था इस लिए ज़रूरत पर दुआ कुनूत मसनून है ।

दुआ ए कुनूत मे हाथ उठाना

इस बारे मे कोई मरफू रिवायत तो नही है अलबत्ता हाथ उठाने मे कोई हरज नही है बलकी अफज़ल है , सलमान फारसी रज़ि से मरफूआ रिवायत है के तुम्हारा रब बहुत ही हया दार व करीम है उस बंदे से जो अपने दोनो हाथ उठाकर दुआ करता है ख़ाली हाथ लौटाते हुए शरमाता है [अबुदाऊद, तिरमीज़ी , इब्ने माजा] उमर बिन अलख़त्ताब रज़ि हाथ उठाकर दुआ करते थे, इमाम बैहक़ी ने अपनी सुनन मे मुख़तलिफ सहाबा कराम से ज़िकर किया है के वो दुआ ए कुनूत मे हाथ उठाया करते थे । दुआ के बाद हाथों को चेहरे पर फेरना सुन्नत से साबित नही है, जो हदीस इस बारे मे बयान का दातीं हैं वो ज़ईफ हैं

वितर की क़ज़ा

जिस की वितर फौत हो जाए वो दिन के किसी भी हिस्से मे इसकी क़ज़ा कर सकता है , अबु सईद ख़ुदरी रज़ि से रिवायत हैं के नबीकरीम सल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया : जो वितर पढ़े बग़ैर सो जाए या भूल जाए तो सुबह के बाद या जब उसे याद आए पढ़ ले । [अबुदाऊद , तिरमीज़ी, अलग़लील] वतर को तुलूअ आफताब के बाद जफत मे पढ़ना भी जायज़ और दुरुस्त है आयशा रज़ि फरमातीं हैं के अल्लाह के रसूल सल्लाहो अलैहे वसल्लम जब कोई सलात पढ़ते तो उस पर मदावत को पसंद फरमाते और दब नींद या तकलीफ की वजह से क़याम पैल न पढ़ पाते तो दिन मे बारह रकत पढ़ते , और मै नही जानती के नबी करीम सल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक रात मे पूरे क़ुरान को पढ़ा हो

या पूरी रात आप सल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सलात पढ़ी हो या रमज़ान के सिवा किसी माह के पूरे सौम रखे हों [मुस्लिम / 746] लिहाज़ जो एक रकत पढ़ता है वो दो और जो तीन रकत पढ़ता है वो चार रकत दिन मे ख़फ्त बना के पढ़ सकता है **वल्लाहो आलम ।**

वितर की दुआ

वितर का सबसे बेहतरीन और जामे दुआ ये है

"ऐ अल्लाह ! मुझे हिदायत दे के उन लोगों के गिरोह मे शामिल फरमा जिन्हे तू ने हिदायत दी है , और मुझे अम्न और शान्ति दे कर उन लोगों मे शामिल फरमा जिन्हे तू ने अम्न और शान्ति दी है , और जिन लोगों को तू ने अपना दोस्त बनाया है उन मे मुझे भी शामिल कर के अपना दोस्त बनाले, जो कुछ तूने मुझे दिया है उस मे मेरे लिए बरकत डाल दे, और जिस बुराई का तू ने फैसला फरमाया है उससे मुझे सुरक्षित रख और बचा ले, बिला शुब्हा तू ही फैसला सुनाता है और तेरे ख़िलाफ फैसला नही किया जा सकता, और जिसका तू मददगार बना वह कभी ज़लील और रुसवा नही हो सकता और वह शख्स इज़्ज़त नही पा सकता जिसे तू दुश्मन कह दे, हमारे रब आक़ा तू बड़ा ही बर्कत वाला और बुलंद ओ बाला है" [अबुदाउद /1425, अनसइ/745, तरमीज़ी /464]

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِي فِيمَنْ هَدَيْتَ، وَعَافِنِي
فِيمَنْ عَافَيْتَ، وَتَوَلَّنِي فِيمَنْ
تَوَلَّيْتَ، وَبَارِكْ لِي فِيمَا أَعْطَيْتَ،
وَقِنِي شَرَّ مَا قَضَيْتَ، إِنَّكَ تَقْضِي وَلَا
يُقْضَى عَلَيْكَ، وَإِنَّهُ لَا يَذِلُّ مَنْ
وَّالَيْتَ، وَلَا يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ
تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ

वितर को तोड़ना

एक रात मे एक ही वितर है तलक़ बिन अली रज़ि फरमाते हैं के मैने अल्लाह के रसूल सल्लाहो अलैहे वसल्लम को फरमाते हुए सुना " एक रात मे दो वितर नही है [अबुदाऊद / 1439,तिरमीज़ी / 470, नसई/ 1679] अगर कोई शख्स इबतेदाइ रात मे वितर पढ़ ले फिर सो जाए फिर जो वो रात के आख़िर हिस्से मे बेदार हो जाए तो वो जितना चाहे दो दो रकत कर के पढ़े उसे वितर को तोड़ना दुरुस्त नही है वो साबिक़ वितर पर इकतेफा करे उसे दूसरी वितर भी पढ़ना जायज़ नही है क्यों के वो जितने भी नवाफिल दो दो कर के पढ़ेगा वो ताक़ ही रहेंगे हफत नही बनेंगे , अल्लामा अब्दुल रहमान मुबारकपूरी रहमहअल्लाह फरमाते हैं के यही (याने वितर को ना तोड़ना) मेरे नज़दीक पसंदीदा है क्यों के मुझे कोई एसी मरफू सहीह हदीस नही मिली जिससे हितर तोड़ने का सबूत मिलता हो [तोहफा अलहौज़ी / 588]

वितर के बाद हमेशा दो रकत नफिल पढ़ना ये दुरुस्त नही है आप सल्लाहो अलैहे वसल्लम ने वितर के बीद सलात पढ़ने से मना फरमाया है, अलबत्ता कभी कभार वितर के बाद दो रकत पढ़ने मे हरज नही क्यों के नबी करीम सल्लाहो अलैहे वसल्लम से वितर के बाद दो रकत पढ़ना भी (कभी कभी) साबित है [मुस्लिम / 738]

CONTACT

ISLAMIC DAWAH CENTER
RAIPUR
QAZI ADNAN AHMED
9009911122
WWW.FACEBOOK.COM/IDCRAIPUR